विगत दो दशकों में ग़ज़ल–गायकी के स्वरूप में हुए परिवर्तन :

एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) से संगीत में पीएच.डी की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

2019

शोध–निर्देशक :
प्रो० सुधा सहगल
संगीत विभाग (गायन)

शोध–सह–निर्देशक :
प्रो0 रवि कुमार भटनागर
संगीत विभाग (गायन)

विभागाध्यक्ष :
प्रो० रवि कुमार भटनागर
संगीतविभाग

शोधकर्त्री :
प्रियंका शर्मा
(संगीत–गायन)

संकाय प्रमुख :
प्रो0 जे. के. वर्मा
कला–संकाय

दयालबाग़ ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा–282005

भूमिका

संगीत हमारी प्रकृति का ही एक रूप है। यह प्राकृत, शाश्वत तथा अनन्त है। संगीत नाद से उत्पादित है तथा नाद 'ऊँकार' से, जो कि इस समस्त सृष्टि के निर्माण का आधार है। मनुष्य ने प्रकृति से ही विभिन्न ध्वनियों तथा बोलियों आदि को सुनकर तथा उनका अनुसरण करके ही संगीत को शनैः–शनैः समझा, सीखा तथा उसे स्वयं में आत्मसात् किया। जिस प्रकार प्रकृति के अनेक रंग और रूप हैं, रस हैं, भाव हैं, ठीक उसी प्रकार संगीत के भी विभिन्न रूप और रंग हैं। प्रकृति के विभिन्न रूपों की ही तरह संगीत की अनेक गायन–विधाएँ हैं, **उदाहरणार्थ –** ख़्याल, टप्पा, ठुमरी, गीत, ग़ज़ल, भजन आदि। 'ग़ज़ल' सुगम–संगीत की एक अति प्रचलित गायन–शैली है।

'ग़ज़ल' से तात्पर्य उस गायन–विधा से है जिसमें विरह से पीड़ित प्रेमी–प्रेमिका की मनोदशा का वर्णन होता है। 'ग़ज़ल' शब्द के व्युत्पत्तिगत अर्थ पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि यह शब्द 'अरबी' भाषा के 'ग़ज़ाला' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'हिरन'। जिस प्रकार वन में विचरण करने वाला 'ग़ज़ाला' (हिरन) घायल होने पर अथाह पीड़ा से गुज़रता है, उसकी उसी पीड़ा का भाव ग़ज़ल–गायकी में पाए जाने के कारण अर्थात् उसी गहरे भाव से इस गायकी को गाने के कारण इस गायन–शैली को 'ग़ज़ाला' के नाम पर ग़ज़ल का नाम दिया गया।

ऐसा माना जाता है कि 'ग़ज़ल' का प्रारंभ अरब देश में लगभग सातवीं शताब्दी में हुआ। अरबी भाषा से यह गायन–विधा फ़ारसी साहित्य में आयी जो कि कलात्मक स्तर पर पूरी तरह अपरिवर्तित रही, किन्तु इसके कथन के प्रारूप में धीरे–धीरे परिवर्तन आए। इसका तात्पर्य यह है कि उन ग़ज़लों में चर्चा तो दैहिक प्रेम की ही की गयी परन्तु उस दैहिक प्रेम को भी उन ग़ज़लों में आध्यात्मिक प्रेम का दर्ज़ा दिया गया। 'अरबी' भाषा का 'इश्क़–ए–मिज़ाजी' फ़ारसी में 'इश्क़–ए–हक़ीक़ी' बन गया। ग़ज़ल–गायकी में प्रेमी को 'साधक' (सादक) और प्रेमिका को 'ब्रह्म' अर्थात् (माबूद) का दर्ज़ा मिला। ग़ज़ल को इस रूप में प्रस्तुत करने का मुख्य श्रेय 'सूफ़ी' साधकों को जाता है अर्थात् उस समय ग़ज़ल–गायकी में पवित्रता का भाव जागृत करने में मुख्य भूमिका 'सूफ़ी' साधकों की ही रही।

'सूफ़ी–साधना' विरह–प्रधान साधना है अतः फ़ारसी ग़ज़लों में संयोग के स्थान पर वियोग की ही प्रधानता रही। उसके पश्चात् धीरे–धीरे ग़ज़ल उर्दू, हिन्दी, बंगाली, नेपाली आदि अनेक भाषाओं में भी लिखी और गायी जाने लगी।

ग़ज़ल का स्वरूप तथा परिवर्तन–परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है जिस भी वस्तु, प्राणी, जीव–जन्तु आदि की उत्पत्ति हुयी है, उसकी समाप्ति अथवा अंत भी निश्चित ही है। इसी उत्पत्ति तथा अन्त के बीच की प्रक्रिया 'परिवर्तन' कहलाती है। परिवर्तन का नियम संगीत में भी लागू होता है। इतिहास इस बात का प्रमाण है कि संगीत की उत्पत्ति से वर्तमान समय तक संगीत में, अथवा यूँ कहें कि उसकी विभिन्न विधाओं में, उनके चलन में, अनेक परिवर्तन हुए हैं।

देश, काल, भाषा, रुचि आदि में परिवर्तन के अनुसार समय–समय पर संगीत में भी प्रचुर मात्रा में परिवर्तन होता रहा है। इसी प्रकार संगीत–गायन की अति प्रचलित तथा लोकप्रिय विधा 'ग़ज़ल' में भी प्रारंभिक चरण से लेकर वर्तमान तक अनेक बदलाव हुए हैं अथवा आए हैं, फिर चाहे वो ग़ज़ल के भाव–पक्ष में हों, साहित्य–पक्ष में हों अथवा संगीत के किसी भी पक्ष में ही क्यों न हों। समस्त पक्षों में कुछ न कुछ परिवर्तन परिलक्षित होता ही है। इन सब पक्षों के बीच एक बड़ा तथ्य यह भी है कि समय, परिस्थितियाँ, क्षेत्र, काल, रुचि, आदि कोई भी कारण रहा हो, किन्तु ग़ज़ल–गायकी की अपनी एक अलग ही आभा रही है और प्रत्येक काल में इस गायन–शैली को अत्यधिक प्रेम, प्रोत्साहन व सम्मान भी मिला।इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि ग़ज़लों के स्वरूप में वर्तमान समय तक अनेक परिवर्तन होने पर भी यह गायन–शैली श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है तथा इसकी लोकप्रियता में कमी नहीं आयी है अपितु दिन–प्रतिदिन बढ़ी है।

ग़ज़ल–गायकी इतनी मधुर, मंत्रमुग्धकारी, ह्रदयस्पर्शी गायकी है कि उसके प्रति उत्कंठा होनी स्वाभाविक ही है। शोधकर्त्री स्वयं भी ग़ज़ल–गायकी में गहन रुचि रखती है, अस्तु उसने इस विधा के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित होकर तत्संबंधी साहित्य का अध्ययन किया। अध्ययन के उपरान्त जो भी महत्त्वपूर्ण शोध–तथ्य प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं :–

शोध–प्रबंध :

क्र.सं.	शीर्षक	नाम	विश्वविद्यालय	वर्ष
1	शास्त्रीय संगीत व उर्दू शायरी विशेषकर ग़ज़ल के सन्दर्भ में	सहगल, सुधा	दयालबाग़ ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट	1989
2	ग़ज़ल के संगीत पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन	प्रवीण, सीमा	विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	1993
3	भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में 'सूफ़ियाना–कलाम' संगीत का अध्ययन	राजकुमारी	इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय	1994
4	वर्तमान समय में लोकप्रिय ग़ज़ल–गायकी के क्षेत्र में सृजनात्मक प्रयोगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	शर्मा, दिनकर	कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय	1997
5	वर्तमान सांगीतिक परिदृश्य में ग़ज़ल विधा को समृद्ध शैली बनाने में शास्त्रीय संगीत का योगदान एवं स्थान	शैलजा	महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय	2011

उपर्युक्त वर्णित विवरणों को देखते हुए व शोधकर्त्री के संज्ञान में आए अब तक हुए शोध–कार्यों, पत्र–पत्रिकाओं आदि में वर्णित विवरणों के आधार पर यह कह सकते हैं कि ग़ज़ल के सांगीतिक पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सूफ़ियाना–कलाम में ग़ज़ल, वर्तमान समय में ग़ज़ल–गायकी में सृजनात्मकता व ग़ज़ल को प्रभावशाली बनाने में शास्त्रीय संगीत के योगदान आदि बिन्दुओं से सम्बन्धित कार्य तो हुए हैं परन्तु ग़ज़ल से सम्बन्धित 'विगत 20 वर्षों में ग़ज़ल–गायकी के स्वरूप में हुए परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय सर्वथा अछूता है। यह परिवर्तन चाहे भाषा के क्षेत्र में हो, विषय–वस्तु के क्षेत्र में हो अथवा राग, ताल, लय, भाव के क्षेत्र में ही क्यों न हो, इसी के साथ ग़ज़ल–गायकी के कतिपय प्रसिद्ध कलाकारों के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर संगीत विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस विषय का चयन किया गया है।

समस्या कथन :

विगत दो दशकों में ग़ज़ल–गायकी के स्वरूप में हुए परिवर्तन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या –

1. **ग़ज़ल –** 'ग़ज़ल' शब्द का व्युत्पत्तिगत अर्थ देखें तो यह शब्द 'अरबी' भाषा से लिया गया है। 'ग़ज़ल' का अर्थ 'ग़ज़ाला' अर्थात् 'हिरन' की अथाह पीड़ा के भाव से है। जिस प्रकार वन में विचरण करने वाला 'ग़ज़ाला' (हिरन) घायल होने पर अथाह पीड़ा से गुज़रता है, उसकी उसी पीड़ा का भाव ग़ज़ल–गायकी में पाए जाने के कारण अर्थात् उसी गहरे भाव से इस गायकी को गाने के कारण इस गायन–शैली को 'ग़ज़ाला' के नाम पर 'ग़ज़ल' का नाम दिया गया।

2. **गायकी –**'गायकी' का शाब्दिक अर्थ है– गायन का ढंग या तरीका अथवा चलन।

3. **परिवर्तन–**'परिवर्तन' का अर्थ है– बदलाव।

4. **विश्लेषण –**'विश्लेषण' का शाब्दिक अर्थ है– छानबीन करना अथवा जाँच करना।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. ग़ज़ल के आधारभूत स्वरूप का अध्ययन।
2. ग़ज़ल–गायकी के कतिपय स्थापित कलाकारों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
3. ग़ज़ल–गायकी के साहित्य का पक्ष का अध्ययन करना।
4. ग़ज़ल–गायकी के सांगीतिक पक्ष का अध्ययन करना।
5. विगत20 वर्षों में ग़ज़ल–गायकी में हुए परिवर्तनों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

परिसीमांकन –समय एवं कार्य–सीमा को देखते हुए प्रस्तुत शोध–कार्य ग़ज़ल–गायकी के क्षेत्र में विगत 20 वर्षों (1990–2010) में हुए परिवर्तनों के अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

अध्ययन की विधि –साक्षात्कार, विवरणात्मक व विश्लेषणात्मक विधि।

अध्ययन के स्रोत –प्रस्तावित शोध–कार्य विभिन्न पुस्तकालयों से प्राप्त पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, इंटरनैट तथा विभिन्न विद्वानों के साक्षात्कार आदि के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा।

अध्ययन के उपकरण–दृश्य एवं श्रव्य–सामग्री, जैसे– कंप्यूटर, मोबाइल, कैमरा, एम.पी.3, एम.पी.4 प्लेयर्स आदि।

अध्यायों का विभाजन–

भूमिका

प्रथम अध्याय :–ग़ज़ल के सैद्धान्तिक एवं आधारभूत स्वरूप का अध्ययन।

द्वितीय अध्याय :–पारम्परिक ग़ज़ल–गायकी का क्रियात्मक स्वरूप।

तृतीय अध्याय :–ग़ज़ल–गायकी में हुये क्रमिक परिवर्तनों का अध्ययन। (1990–2000)

चतुर्थ अध्याय :–ग़ज़ल–गायकी में हुये क्रमिक परिवर्तनों का अध्ययन। (2000–2010)

पंचम अध्याय :–ग़ज़ल–गायकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

षष्ठम अध्याय :–ग़ज़ल के कतिपय स्थापित कलाकारों का अध्ययन।

निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

पुस्तकें :–

नाम	लेखक	प्रकाशन	वर्ष
म्यूज़िकल हैरिटेज ऑफ लखनऊ	डॉ0 मिश्रा सुशीला	साउथ एशिया बुक्स प्रकाशन	1991
ग़ज़ल की बाबत	केसरी वीनस	अंजूमन प्रकाशन, इलाहाबाद	2015
समकालीन स्पंदन ग़ज़ल विशेषांक	स्पंदन	काशी प्रकाशन	2015
ग़ज़ल प्रसंग	सिंहराणा प्रताप	रैड ग्रैब बुक्स प्रकाशन	2018

शोध प्रबन्ध :–

1. सहगल, सुधा, वर्ष 1989, शास्त्रीय संगीत व उर्दू शायरी विशेषकर ग़ज़ल के सन्दर्भ ,शोध–प्रबन्ध, दयालबाग़ ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट।
2. प्रवीण, सीमा, वर्ष 1993 ग़ज़ल के संगीत पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन,शोध–प्रबन्ध,विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।
3. राजकुमारी, वर्ष 1994, भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में सूफ़ियाना–कलाम' संगीत का अध्ययन,इंदिरा कला संगीत,शोध–प्रबन्ध।
4. शर्मा, दिनकर, वर्ष 1997, वर्तमान समय में लोकप्रिय ग़ज़ल–गायकी के क्षेत्र में सृजनात्मक प्रयोगों का विश्लेषणात्मक अध्ययन,शोध–प्रबन्ध,कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय।
5. शैलजा,वर्ष 2011, वर्तमान सांगीतिक परिदृश्य में ग़ज़ल विधा को समृद्ध शैली बनाने में शास्त्रीय संगीत का योगदान एवं स्थान, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय।

वेबसाइट्स :–

1. रेख़्ता. कॉम
2. ग़ज़ल विकिपीडिया
3. साहित्य शिल्पी . कॉम
4. शोधगंगा . कॉम

साक्षात्कार–प्रश्नावली

प्र–1 ग़ज़ल–गायकी में शास्त्रीय संगीत का क्या महत्व है ?

प्र–2 वर्तमान में ग़ज़ल–गायकी में किन–किन नवीन रागों का प्रयोग हो रहा हैं ?

प्र–3 ग़ज़ल–गायकी में किन–किन नवीन तालों का प्रयोग किया जा रहा है ?

प्र–4 एक दौर ऐसा भी रहा, जब 90 के दशक में फिल्मों में भी ग़ज़लनुमा गीत अथवा ग़ज़लों का अच्छा और काफी प्रयोग किया जाता रहा है, वर्तमान में फिल्मों में ग़ज़लनुमा गीतों के प्रयोग में गिरावट दिखी है, इस पर आपका क्या मत है ?

प्र–5 वाद्यों के चारों प्रकारों के किन–किन वाद्यों का ग़ज़ल–गायकी में नवीन प्रयोग हो रहा है और भविष्य में उसकी और क्या सम्भावनाएँ हो सकती हैं ?

प्र–6 ग़ज़ल–गायकी में पाश्चात्य संगीत के प्रयोग का क्या प्रभाव है तथा इसका ग़ज़ल–गायकी में प्रयोग कहाँ तक उचित है ?

प्र–7 कुछ लोग ग़ज़ल–गायकी को हेय दृष्टि से देखते है, उनका ऐसा मानना है कि ग़ज़ल–गायकी में आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग होने तथा उनका अर्थ श्रृंगारिक होने के कारण समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस विषय में आपका क्या मत है ?

प्र–8 ग़ज़ल के साहित्य में किस प्रकार के परिवर्तन अब तक हुए हैं तथा भविष्य में किस प्रकार के साहित्यिक परिवर्तनों की सम्भावना है ?

प्र–9 पारम्परिक ग़ज़ल–गायकी का प्रचलन वर्तमान में युवा पीढी के मध्य लुप्त सा क्यों है ?

प्र–10 पारम्परिक ग़ज़ल–गायकी को लोकप्रिय बनाने के क्या उपाय हो सकते हैं ?

प्र–11 वर्तमान में लोकप्रिय ग़ज़ल–गायकों में आपके सर्वप्रिय ग़ज़ल–गायक कौन से हैं ?

प्र–12 नवीन प्रयोगों की दृष्टि से आप किन–किन गायकों को बेहतर मानते हैं ?

प्र–13 व्यवसायिक दृष्टि से वर्तमान में पारम्परिक ग़ज़ल–गायकी कहाँ तक सफल है ?

प्र–14 वर्तमान में अनेक ग़ज़ल–गायक बिना शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लिये ही मंच–प्रदर्शन दे रहे हैं, ऐसे कलाकारों को प्रोत्साहन देना कहाँ तक उचित है ?

प्र–15 वर्तमान में विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजनों को दृष्टिगत करते हुये ग़ज़ल–गायकी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए अथवा नहीं, इस विषय पर आपके क्या विचारहैं?